डी.आर.आर.

चावल अनुसंधान निदेशालय

समाचार

खंड 9.अंक. 4 | चावल जीवन है । | अक्तूबर–2011

निदेशक की कलम से...

डी.आर.आर. समाचार के वर्तमान अंक की प्रस्तुत करते हुए मुझे बडी प्रसन्नता हो रही है जिसमें रिपोर्ट की अवधि के दौरान धान अनुसंधान से संबंधित कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ तथा अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ सम्मिलित हैं ।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प) द्वारा स्थापित राष्ट्रीय पुरस्कारों से इस निदेशालय के तीन वैज्ञानिकों को पुरसकृत किया गया है । डॉ.जे.एस.बेंतूर, कीट विज्ञानी को रफी अहमद किद्वाई पुरस्कार प्राप्त हुआ, डॉ. एन.सरला, (जैव प्रौद्योगिकी विज्ञानी) को पंजाबराव देशमुख पुरस्कार प्रदत्त किया गया और डॉ.आर.एम.सुंदरम को लाल बहादुर शास्त्री उत्कृष्ट युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया । पुरस्कार विजेताओं को मेरी बधाई। और एक महत्वपूर्ण घटना भा.कृ.अनु.प. स्थापना दिवस के अवसर पर 16 जुलाई, 2011 को माननीय प्रधान मंत्री डॉ.मनमोहन सिंह के समक्ष चावल ज्ञान प्रबंधन द्वार का ई-प्रवर्तन करना है ।

इस निदेशालय पर 2 अगस्त, 2011 को एक अभिनव कृषक अधिवेशन आयोजित किया गया जो भा.कृ.अनु.प. का इस प्रकार का द्वितीय अधिवेशन है जिसके दौरान अभिनव धान के कृषकों को सम्मानित किया गया । 17-30 अगस्त, 2011 के दौरान चावल सुधार के लिए आणविक प्रजनन पर एक राष्ट्रीय कृषि अभिनव परियोजना द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त, 7-27 सितंबर, 2011 तक बीटी. धान मूल्यांकन एवं फैलाव रणनीति पर एक शीतकालीन पाठशाला का आयोजन किया गया ।

इस वर्ष की वर्षा की स्थिति उत्साहवर्धक है चाहे, दक्षिण-पश्चिमी मौसम के अंडमान समुद्र पर आरंभ होने में लगभग 10 दिन की देरी हुई फिर भी 29 मई, 2011 को केरल में साधारण तिथि से तीन दिन पहले । जून को परिव्याप्त हुआ और सारे भारत में छः दिन पहले 9 जुलाई तक फैल गया, पश्चिम राजस्थान से मौसम की वापसी में भी देरी हुई जो 23 सितंबर, 2011 को आरंभ हुई। कुल मिलाकर सारे देश के लिए, इस मौसम (जून-सितंबर) की वर्षा 101% दीर्घावधिक औसत था। इस वर्ष 100 मि.ट. का सम्मोहक लक्ष्य को पार करने की संभावना बहुत अधिक प्रतीत होती है ।

मेरी आशा है कि चावल अनुसंधान में सम्मिलित सभी लोगों के लिए इस समाचार के विषय काफी सूजनाप्रद और उपयोगी सिद्ध होंगे। इसके और सुधार के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का मैं तहेदिल से स्वागत करता हूँ।

बी.सी. विरक्तमठ

(बी.सी.विरक्तमठ)

निर्यात परिदृश्य

2010-11 मौसम में भारत के बासमति चावल के निर्यात के 9% तक वढने की संभावना

अखिल भारतीय चावल निर्यात संघ के कथन के अनुसार पाकिस्तान में बाढग्रस्तता के कारण फसल में क्षति के फलस्वरूप भारतीय सुगंधित चावल की माँग बढने की संभावना है जिससे अक्तूबर से आरंभ होनेवाले 2010-11 के मौसम में देश के बासमति चावल के निर्यात की नौ प्रतिशत

तक वृद्धि होकर 3.5 मिलियन टन तक पहुंचेगी। अखिल भारतीय निर्यात संघ के अध्यक्ष श्री विजय सेथिया के अनुसार इस माह तक अंत होने वाले वर्तमान विपणन वर्ष में भारत का आकलित निर्यात 3.2 मिलियन टन है और 2010-11 में नौभरण 3.5 मिलियन टन तक बढने की संभावना है।

सेथी की व्याख्या है 15-20 प्रतिशत क्षेत्रफल की वृद्धि के कारण सुगंधित चावल का उत्पादन विगत वर्ष के 4.5 मिलियन टन से अधिक होगा और अतः देश में उसकी आपूर्ति अधिक होने की संभावना है । भारतीय निर्यातक बासमति चावल का नौभरण यूएसडी 100 प्रति टन के न्यूनतम निर्यात मूल्य पर कर रहे हैं। एक आकलन के अनुसार, पाकिस्तान में लगभग सात लाख हेक्टर चावल की फसल आंशिक या पूर्णतः जलमग्न हो गयी ।

संस्थागत गतिविधियों का परिदृश्य

अभिनव धान के कृषकों का अधिवेशन आयोजित (2 अगस्त, 2011)

चावल अनुसंधान निदेशालय द्वारा अभिनव धान के कृषकों का अधिवेशन 2 अगस्त, 2011 को आयोजित किया गया। इस प्रकार का प्रथम अधिवेशन सुत्तूर, मैसूर जिला, कर्नाटक में भा.कृ.अनु.प. द्वारा आयोजित करने के बाद यह द्वितीय अधिवेशन है। परियोजना निदेशक, चावल अनुसंधान निदेशालय डॉ.बी.सी.विरक्तमठ के स्वागत भाषण के तदुपरांत डॉ.के.डी.कोकाटे, उप महानिदेशक, (विस्तार) ने उद्घाटन भाषण दिया और डॉ.विजय लक्ष्मी, अतिरिक्त कृषि निदेशक, आंध्र प्रदेश सरकार ने एक विशिष्ट संदेश दिया। कृषि समुदाय की सेवा में डी.आर.आर. नामक पुस्तिका का विमोचन डॉ.के.डी.कोकाटे ने किया और धान की अभिनव विधियाँ नामक पुस्तक का विमोचन डॉ.एस.के.दत्ता, उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) ने किया जिसका संपादन डॉ.शेक एन.मीरा, डॉ.एस.अरुण कुमार, डॉ.मंगर सैन और डॉ.बी.सी.विरक्तमठ ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ.एस.के. दत्ता ने राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान पध्दति में कृषकों की अभिनव विधियों को सम्मिलित करने की आवश्यकता पर बल दिया। किस्मों के चयन में अभिनव विधियाँ, धान की खेती में अभिनव पध्दतियाँ, जल, नाशकजीव, रोग, अपतृण प्रबंधन में अभिनव विधियाँ, फार्म यंत्र, कटाई उपरांत प्रौद्योगिकी और मूल्यवर्धन में अभिनव विधियाँ जैसी विविध श्रेणियों के अंतर्गत कृषकों ने अपने अनुभवों का आदान-प्रदान किया। कुछ कृषकों को विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत अपनी अभिनव विधियाँ के लिए सम्मानित किया गया।

आर.के.एम.पी. इलक्ट्रानिकी आरंभ किया गया

16 जुलाई, 2011 को भा.कृ.अनु.प. के स्थापन दिवस के अवसर पर डॉ.एस.अय्यप्पन, सचिव, कृ.अनु.शि.वि और महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. के समक्ष रा.कृ.अ.प. के समर्थन से चा.अनु.नि. द्वारा विकसित चावल ज्ञान प्रबंधन द्वार (चा.ज्ञा.प्र.द्वा) (आर. के.एम.पी) का इलक्ट्रानिकी आरंभ किया गया। डॉ.बी.सी. विरक्तमठ चा.ज्ञान.प्र.द्वा संघ के नेता और परियोजना निदेशक चा.अनु.नि., डॉ.शेक एन.मीरा, वरिष्ठ वैज्ञानिक और चा.ज्ञा.प्र.द्वा. संघ के प्रधान अनुसंधाता भी उस समारोह के सहभागी थे ।

चावल अनुसंधान निदेशालय द्वारा हिन्दी सप्ताह समारोह आयोजित हिन्दी सप्ताह फोटो

चावल अनुसंधान निदेशालय द्वारा 14 सितंबर, 2011 से 22 सितंबर 2011 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। 14 सितंबर, 2011 को हिन्दी सप्ताह का आरंभ किया गया और उसी दिन शब्द प्रश्नोत्तरी (क्विज) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 15 तारीख को अंत्याक्षरी, 16 तारीख को तत्काल भाषण, 17 तारीख को छायाचित्र का वर्णन, 19 तारीख को छाया चित्र का वर्णन (केवल चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए), 20 तारीख को हिंदी कार्यशाला का आयोजन (सभी वर्ग के लिए) किया गया । 22 सितंबर, 2011 को हिंदी सप्ताह के समापन समारोह का आयोजन किया गया ।

14 सितंबर, 2011 को इस निदेशालय के डॉ.जे.एस.प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी निदेशक, की अध्यक्षता में हिंदी सप्ताह समारोह का आरंभ किया गया । उस अवसर पर डॉ.डी.वेंकटेश्वर्लु, तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने सभा का स्वागत किया। 22 सितंबर, 2011 को हिंदी सप्ताह के समापन समारोह का आयोजन निदेशालय के परियोजना निदेशक डॉ.बी.सी.विरक्तमठ की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। डॉ.बी.सी.विरक्तमठ, परियोजना निदेशक एवं निदेशालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्थान में इस वर्ष संपन्न विविध कार्यक्रमों का विवरण देते हुए बताया कि हर साल कुछ नये कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा सहभागियों में उत्सुकता जगाने के प्रयास को सराहा।

इसके बाद मुख्य अतिथि प्रो.जयकिशन, उस्मानिया विश्वविद्यालय ने अपने वक्तव्य में इस बात पर बल दिया कि हिंदी सीखने से आजकल रोजगार के काफी अवसर प्राप्त हो रहे हैं ।विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये । सुश्री वनिता, कनिष्ठ लिपिक के धन्यवाद ज्ञापन के द्वारा कार्यक्रम समाप्त हुआ।

रामचंद्रापुरम फार्म, इक्रीसैट पर कृषि क्षेत्र कार्यालय व प्रयोगशाला का उदघाटन (20 सितंबर, 2011) किया गया।

चावल अनुसंधान निदेशालय फार्म, रामचंद्रापुरम, इक्रिसैट हैदराबाद पर नवविकसित कृषि क्षेत्र कार्यालयव प्रयोगशाला का 20 सितंबर, 2011 को डॉ.एस.के.दत्ता, उपमहानिदेशक (फ.वि.), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने किया । इस समारोह की अध्यक्षता डॉ.विलियम डी दार, महानिदेशक इक्रीसैट ने की। उस अवसर पर उन्होंने इक्रीसैट और भा.कृ.अनु.प. के बीच सहभागिता की महत्ता पर बल दिया और नयी फार्म कार्यालय सुविधा को विकसित करने के लिए डॉ.एस.के.दत्ता और डॉ.बी.सी.विरक्तमठ और चावल अनुसंधान निदेशालय के अन्य कर्मचारीगण को बधाई दी।

रा.अ.ज.स.कृ-डी.आर.आर. वेबसाइट का आरंभ (29 अगस्त, 2011)

राष्ट्रीय अभिनव जलवायु समुत्थानशील कृषि (रा.अ.ज.स.कृ) - चावल अनुसंधान निदेशालय (चा.अनु.नि.) के वेबसाइट का उद्घाटन डॉ.बी.सी.विरक्तमठ, परियोजना निदेशक, चा.अनु.नि. द्वारा 29 अगस्त, 2011 को किया गया। यह वेबसाइट इस निदेशालय पर रा.अ.ज.स.कृ. से संबंधित विविध गतिविधियों की जानकारी देता है। उपयोगकर्ता को जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में धान की खेती से संबंधित जलवायु समुत्थानशील अनुसंधान, जीनोप्रकार, प्रौद्योगिकियाँ, जलवायु परिवर्तन के संभाव्य प्रभाव, अंगीकरण, भौगोलिक सूचना प्रणाली की प्रयुक्तियाँ आदि के बारे में सूचना मिलती है। रा.अ.ज.स.कृ. - चा.अनु.नि. वेबसाइट http:/www.drricar.org.8000 पर उपलब्ध है। इस वेबसाइट लिंक DRR (NICRA-DRR) और CRIDA (NICRA-DRR) में भी मिलता है।

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

चावल सुधार के लिए आणविक प्रजनन (17-30 अगस्त, 2011)

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान विस्तार पध्दति के फसल प्रजनकों और जैव-प्रौद्योगिकी वैज्ञानिकों को जैव-प्रौद्योगिकी के अनुसंधान एवं विकास के त्वरित परिवर्तनशील संसार के अनुरूप सक्षम बनाने के उद्देश्य से आणविक चिह्नकों और जीनोमिक्स के साथ ट्रान्सजेनिक्स से संबंधित मौलिक ज्ञान और कुशलताएँ प्रशिक्षण द्वारा प्रदान करने के लिए चावल अनुसंधान निदेशालय द्वारा 17-30 अगस्त, 2011 तक भा.कृ.अनु.प. के राष्ट्रीय कृषि अभिनव परियोजना के अधीन चावल सुधार के लिए आणविक प्रजनन शीर्षक पर एक राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । डॉ.बी.सी.विरक्तमठ, परियोजना निदेशक चा.अनु.नि. इसके लिए पाठ्यक्रम निदेशक थे और चा.अनु.नि. के जे.एस.बेंतूर, प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान), डॉ.आर.एम. सुंदरम, वरिष्ठ वैज्ञानिक (जैवप्रौद्योगिकी) और डॉ. शेक एन. मीरा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) ने राष्ट्रीय समन्वयकों को रूप में काम किया। सरकारी संगठनों/ राज्य कृषि विश्वविद्यालयाँ/ विश्वविद्यालयों के कार्यपालकों/ वैज्ञानिकों की प्रशिक्षण आवश्यकाओं को ध्यान में रखते हुए इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की योजना बनायी गयी ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन 17 अगस्त, 2011 को पद्मश्री प्रोफेसर.ई.ए.सिद्दीख द्वारा किया गया । इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भा.कृ.अनु.प. संस्थानों, छः राज्य कृषि विश्वविद्यालयों ने भाग लिया। इनमें से अत्यधिक प्रशिक्षणार्थी धान, मक्का, दलहन और तिलहन जैसी फसलों पर कार्य करने वाले पादप प्रजनक हैं जिन्हें फसल सुधार के लिए आण्विक उपकरणों के प्रयोग संबंधी पूर्वज्ञान

प्राप्त है । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्नांकित विषयों पर संकेंद्रित किया गया। आणविक चिन्हकों के मौलिक सिध्दांत, अणविक चिह्नकों का प्रयुक्ति-क्षेत्र, चिह्नक सहायता प्राप्त चयन (एम.ए.एस.) की धारणा, मानचित्रण जीवसंख्या का विकास, फेनोटइपिंग, जीनोटइपिंग और अनुबंध विश्लेषण, क्यू.टी.एल. मानचित्रण तथा प्रवेशन, आणविक चिह्नक आधारित संकर और पैतृक वंशक्रम बीज शुध्दता निर्धारण, उन्नत चावल किस्मों में जैविक तथा अजैविक तनाव प्रतिरोधी जीनों का प्रवेशन, आनुवंशिकी अभियांत्रिकी के मौलिक सिध्दांत, चिह्नकों के प्रयोग द्वारा पारजीनी पादपों की पहचान, धान जीनोमिक्स के मौलिक और प्रयुक्ति पक्ष और अभिकल्प द्वारा प्रजनन की धारणा । इस पाठ्यक्रम में सैध्दांतिक व्याख्यान और व्यावहारिक अभ्यास दोनों सम्मिलित हैं ।

तदुपरांत पाठ्यक्रम के अंतिम दिवस को उभरते विषय जी.एम.ओ. और जनता की स्वीकार्यता पर विशेषज्ञों के साथ विचार-विमर्श सत्र का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के संकाय सदस्यों में फसल जैव-प्रौद्योगिकी प्रयुक्तियों के क्षेत्र में कार्यरत प्रसिध्द राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय अनुसंधाता सम्मिलित हैं।

बीटी. धान मूल्यांकन और फैलाव रणनीति पर शीतकालीन पाठशाला (7-27 सितंबर, 2011)

इस निदेशालय द्वारा 7-27 सितंबर, 2011 तक बीटी. धान मूल्यांकन और फैलाव रणनीति पर भा.कृ.अनु.प. द्वारा प्रायोजित एक शीतकालीन पाठशाला का आयोजन किया गया । इसका उद्देश्य वैज्ञानिकों को बीटी.धान के विकास और फैलाव के संबंध में आधारभूत ज्ञान के बारे में डॉ.एस.एस. बालचंद्रन, प्रधान वैज्ञानिक (जैवप्रौद्योगिकी) ने इस शीतकालीन पाठशाला का आयोजन किया। इसके पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ.जे.एस.बेंतूर, ए.पी. पद्मकुमारी, एम.मोहन, एस.के. मंगरौठिया और पी.मुत्तुरामन थे जिन्होंने अपना समर्थन प्रदान किया ।

इस शीतकालीन पाठशाला का उद्घाटन डॉ.के. कृष्णय्या, पूर्व परियोजना निदेशक, चा.अनु.नि. के द्वारा किया गया। डॉ.बी.सी.विरक्तमठ, परियोजना निदेशक, चा.अनु.नि. ने इसकी अध्यक्षता की। इस शीतकालीन पाठशाला में 11 राज्यों के भा.कृ.अनु.प. संस्थानों और कृषि विश्वविद्यालयों से चौबीस सहभागियों ने हिस्सा लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रधानतः निम्नांकित विषयों पर सकेंद्रित किया गया। धान के नाशकजीवों का सामान्य परिचय, नाशक कीटों की देशी प्रतिरोधिता के लिए पारंपरिक प्रजनन की सीमाएँ, कृषि में बीटी के ऐतिहासिक विकास और उनका प्रयोग, धान में जीन अंतरण की विधियाँ, बीटी पारजीनी (ट्रान्सजेनिक्स) का जैविक मूल्यांकन, समेकित नाशकजीव प्रबंधन के साथ बीटी प्रौद्योगिकी का समेकन, आणविक चिह्नकों के प्रयोग द्वारा कीटकों की प्रति प्रतिरोधिता के लिए जीनों का पिरामिडिंग और राशीकृत करना, फैलाव के लिए प्रतिरोधिता विकसित करने के लिए आर.एन.ए.आई. उपागम, पारजीनी धानों के मूल्यांकन के लिए जैव सुरक्षा विनियम और प्रक्रिया संबंधी आवश्यकता, बीटी पारजीनी धानों के फैलाव और पारिस्थितिकी मूल्यांकन, जी.एम. फसलों के विमोचन के संबंध में सामाजिक और नैतिक पहलू, इस तीन सप्ताह तक परिव्याप्त पाठ्यक्रम में सैध्दांतिक व्याख्यान तथा व्यावहारिक अभ्यास दोनों का समावेश है। इसमें बीटी के क्षेत्र में प्रसिध्द वैज्ञानिकों के भाषण और बाह्य क्षेत्र/ प्रयोगशाला के वीक्षण भी सम्मिलित थे।

BOOK POST

प्रकाशन : डॉ.बी.सी.विरक्तमठ
संपादक वर्ग : डॉ.डी.वेंकटेश्वर्लु एवं सुश्री वनिता
सहयोग : डॉ.एम.बी.बी.प्रसाद बाबू, डॉ.एस.के.मंगरौठिया, डॉ.के.सुनीता, डॉ.एम.संपत कुमार,
पता : चावल अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद – 500 030, आ.प्र. भारत
दूरभाष : +91-40-24591216, 24591254 फैक्स : + 91-40-24591217 ई.मेल : pdrice@drricar.org